शोध मंथन Vol. XIII No.I Jan.-Mar.2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

शिक्षण व्यवसाय – जिम्मेदारी और जवाबदेही

प्राप्तिः 28.02.2022
स्वीकृतः 16.03.2022

डॉ० सुमन शर्मा
प्रोफेसर
इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर एजुकेशन,
कादराबाद, मोदीनगर
ईमेलः *sumansharmaite@gmail.com*

सारांश

उत्तरदायित्व या जवाब देही का संबंध उस परिश्रम से है, जो प्रत्येक अध्यापक को याद दिलाता रहे कि रोजगार अपनाने के कारण वह हर उस परिवार के प्रति जो अपने बच्चे को विद्यालय भेजते हैं, और प्रत्येक उस बच्चे के प्रति जिससे अध्यापक की सेवाएं प्राप्त होती है–जिम्मेदार हैं। जवाबदेही की समस्या बड़ी जटिल, कठिन व संवेदनशील है साथ ही यह उतनी ही महत्वपूर्ण है। जवाबदेही के बिना अराजकता की संभावना बनी रहती है। इसके बिना 'जो चाहे', 'सो करें' की स्थिति बन सकती है। परंपरागत प्रणाली आज के युग में उपयोगी नहीं क्योंकि ज्ञान के स्तर में निरंतर वृद्धि हो रही है, इसलिए यह और भी आवश्यक हो जाता है कि प्रतिभाओं की पहचान करते हुए उन्हें शिक्षण व्यवसाय हेतु प्रोत्साहित किया जाए। ऐसे में अध्यापकों की जवाबदेही अपने प्रति, समाज के प्रति व अभिभावकों के प्रति आवश्यक हो जाती है। दुर्भाग्य से इस व्यवसाय को अंतिम व्यवसाय के रूप में विद्यार्थी मान कर चलते हैं और हमारे अध्यापकों का एक बड़ा हिस्सा अपने उत्तरदायित्व से भागता है, जिसके लिए सरकार को कानून का शिकंजा कसना पड़ता है और सरकार जवाबदेही के लिए बाध्य करने को तैयार हैं।

कभी–कभी खुद से बात करो, कभी–कभी खुद से बोलो,
अपनी नजर में तुम क्या हो, दिल की तराजू से तोलो।
हमदम तुम बैठे न रहो शोहरत की इमारत में,
कभी–कभी खुद को पेश करो आत्मा की अदालत में।

(कवि प्रदीप)

प्रसिद्ध विद्वान एच० जी० वेल्स ने अध्यापक के कार्य को महत्ता प्रदान करते हुए उसे 'राष्ट्र का निर्माता' कहा है। इसलिए अध्यापक का कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण है। अध्यापक ही संपूर्ण शिक्षा पद्धति का निर्देशिन एवं संचालन करता है जो कि अंत में राष्ट्र के बहुमुखी विकास को प्रभावित करती है। कितनी भी सुंदर इमारत, शक्तिशाली पाठ्यक्रम, मूल्यवान उपकरण हो वे तब तक उपयोग नहीं हो सकते, जब तक ऐसे अध्यापक ना हो जो अपने व्यवसाय की महानता और संबंधित उत्तरदायित्व से सुपरिचित न हो। इसके हाथ में बच्चों की सुरक्षा एवं मार्गदर्शन का श्रेष्ठतम कार्य दिया गया है।

एक अच्छे अध्यापक में कक्षा स्तर के अनुरूप योग्यता का होना, पाठ्य सहगामी क्रियाओं में निपुण होना, सीखने की क्रिया व उसके निर्धारण तत्वों की समझ होना विद्यार्थियों में उचित

अभिवृत्ति व कार्य मूल्य को विकसित करने का ज्ञान होना, उसका संबंध सभी छात्रों से पुत्रवत होना चाहिए, उसके व्यक्तित्व में परंपरा और आधुनिकता मेल हो, समयनुसार कार्य करता हो, पहले से ही विषय का ज्ञाता हो, अच्छा मार्गदर्शक व संरक्षक हो, बच्चों की विविध प्रतिभा को प्रकट करने वाला हो और विद्यालय में नियमित हो। निम्न गुणों का होना आवश्यक है। अगर एक अध्यापक उपयुक्त गुणों से खरा नहीं उतरता तो वह इसके प्रति जवाबदेही का हकदार बन जाता है। उत्तरदायित्व या जवाबदेही का संबंध उस परिश्रम से है जो प्रत्येक अध्यापक को याद दिलाता रहे कि रोजगार अपनाने के कारण वे हर उस परिवार के प्रति जो अपने बच्चे को विद्यालय भेजते हैं और प्रत्येक उस बच्चे के प्रति जिसे अध्यापक की सेवाएं प्राप्त होती हैं – जिम्मेदार है। जवाबदेही की समस्या बड़ी जटिल कठिन तथा संवेदनशील है। साथ ही उतनी ही महत्वपूर्ण है। जवाबदेही, के बिना अराजकता की संभावना बनी रहती है इसके बिना 'जो चाहे' 'सो करें' की स्थिति बन सकती हैं। अगर एक अध्यापक अपने कर्तव्यों का निर्वाह मेहनत व ईमानदारी से नहीं करता तो वह निम्न पक्षों पर जवाबदेही का जिम्मेदार है। छात्रों का चारित्रिक विकास, प्रभावशाली शिक्षण अधिगम, व्यक्तिगत अंतरों का निराकरण, कक्षा का प्रबंध किस प्रकार किया, पाठांतर क्रियाओं का आयोजन किस प्रकार किया, छात्रों का शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन छात्रों के कार्यों का मूल्यांकन, विभागीय नियमों का पालन संपूर्ण विद्यालय व्यवस्था में भागीदारी और कक्षा का परीक्षा फल किस प्रकार रहा?

उद्देश्य

1. शिक्षण व्यवसाय में निस्वार्थ भाव से काम करना।
2. छात्रों के ज्ञान विज्ञान में निरंतर अभिवृद्धि करना।
3. शिक्षार्थियों का सर्वांगीण विकास करना।
4. राष्ट्र के लिए सांस्कृतिक नागरिक तैयार करना।
5. छात्रों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति सम्यक अभिरुचि उत्पन्न करना।
6. शिक्षण से संबंधित सभी कर्तव्यों का ईमानदारी से निर्वाह करना।
7. अपने शिक्षण व्यवसाय के प्रति गहन समर्पण की भावना रखना।
8. विद्यार्थियों के लिए एक आदर्श (रोल मॉडल) बनना।
9. शिक्षा दान के कि पुनीत कार्य को व्यापार या कारोबार नहीं समझना।
10. उप शिक्षण (TUTION) का कार्य नहीं करने का दृढ़ संकल्प होना।

अध्यापक का कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण है। प्राचीन काल में अध्यापन या शिक्षण को एक सेवक के रूप में देखा जाता था। जब ज्ञानदान को एक पवित्र और एक महत्वपूर्ण सामाजिक हित में कार्य के रूप में स्वीकृति और मर्यादा दी जाती थी। प्रसिद्ध विद्वान **एच० जी० निर्माता** ने कहा है **अध्यापक ही संपूर्ण शिक्षा पद्धति का निर्देशन एवं संचालन करता है। जो कि अंत में राष्ट्र बहुमुखी विकास को प्रभावित करती है। कितनी भी सुंदर इमारत, शक्तिशाली पाठ्यक्रम, मूल्यवान उपकरण हो – वे तब तक उपादेय नहीं हो सकते जब तक ऐसे अध्यापक न हो, जो अपने व्यवसाय की महानता और संबंधित उत्तरदायित्वो से सुपरिचित न हो। इसके हाथ में बच्चों की सुरक्षा एवं मार्गदर्शन का श्रेष्ठतम कार्य दिया गया है। माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार,** 'हमें' पर्ण विश्वास है कि अपेक्षित शिक्षा पुनः निर्माण में अध्यापक का स्थान उसके व्यक्तिगत गुण, शैक्षिक योग्यता तथा

व्यवसायिक प्रशिक्षण पर है। विद्यालय की प्रसिद्धि और समाज पर इसका प्रभाव कार्य करने वाले अध्यापकों पर ही निर्भर करता है।''

अर्वाचीन काल में यह एक व्यवसाय का रूप लेता गया और अध्यापक/अध्यापिकाएं वेतन लेकर उसके एवज में ज्ञान देने का कार्य करने लगे। आधुनिक काल में इसे एक उद्यम या आजीविका का सवरूप प्रदान किया जा रहा है। अध्यापक का व्यवसाय पेट भरने का साधन हो सकता है, परंतु उद्देश्य नहीं क्योंकि इस व्यवसाय में बौद्धिक निपुणता की आवश्यकता होती है। शिक्षण कार्य ऐसा कार्य है जिसके लिए उत्साह व समर्पण भाव की अधिक आवश्यकता पड़ती है। इसलिए केवल आर्थिक लाभों के आधार पर व्यावसायिक सफलता का निर्धारण नहीं किया जा सकता है। यह व्यवसाय केवल विद्यार्थियों के लिए होता है परंतु खेद का विषय है कि अध्यापक समुदाय आर्थिक लाभों के लिए तो आंदोलन करते हैं, लेकिन अपनी व्यावसायिक प्रवीणता को बढ़ाने के लिए तन, मन, धन, वचन व कार्य से प्रयास नहीं करते। यह आज नहीं कहा जा सकता कि विषय सामग्री का अधिक ज्ञान रखने वाला व्यक्ति अच्छे ढंग से लेगा, आपने इस व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने के लिए हमें कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए।

कक्षा स्तर के अनुरूप आवश्यक योग्यता का ज्ञान होना। उत्तम शैक्षणिक अभिलेख तैयार करना, पाठ्यगामी सह–क्रियाओं में निपुण होना, बालक के विविध पक्षीय विकास उसे प्रभावित करने वाले कारकों के कार्यों का ज्ञान होना, सीखने की क्रिया व उसके निर्धारक तत्व की समझ होना, अनुशासन का महत्व व उसका प्रभाव बाल विकास पर पड़ने का ज्ञान होना, शिक्षण के दार्शनिक समाजशास्त्रीय व मनोवैज्ञानिक आधारों का ज्ञान होना, मूल्यांकनकर्ता की भूमिका को प्रभावी ढंग से निभाने में समर्थ होना विद्यार्थियों में उचित अभिवृत्ति व कार्य मूल्यों को विकसित करने का ज्ञान होना, विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों की विकासात्मक और अन्य आवश्यकताओं को समझने का ज्ञान होना। अध्यापकों के संबंध पुत्रवत होने चाहिए, बाल विज्ञान का ज्ञान होना, व्यक्तित्व में परंपरा और आधुनिकता का मेल हो, समय का पाबंद हो, पहले से विषय की तैयारी हो, शिक्षक–छात्र वत्सल हो, शिक्षक मार्गदर्शक हो, संरक्षक हो, उनकी विविध प्रतिभा को प्रकट कराने वाला हो और विद्यालय में नियमित हो।

विद्यालय में अध्यापक तथा अन्य कर्मचारियों की नियुक्ति की जाती है। उन्हें कुछ कार्य सोपे जाते हैं तथा उन्हें इसके बदले पारिश्रमिक दिया जाता है। कर्मचारियों को कुछ जिम्मेदारियां दी जाती हैं। प्रबंधकों को पूरा–पूरा अधिकार है कि वे उनके कार्य की समीक्षा करें।

दूसरे शब्दों में जो परिश्रमिक मिलता है उसके बदले में हमारे कुछ दायित्व है। इन दायित्वों को निभाना हमारा कर्तव्य बन जाता है। हम किस प्रकार से इसे निभाते हैं, उसके लिए हम किसी न किसी को अपने किए गए कार्य का लेखा–जोखा देते हैं। हम इस प्रकार से एक बंधन के अंतर्गत कार्य करते हैं। यह बंधन किस मात्रा में किस सीमा तक निभाते हैं यह हमारी जवाबदेही है।

यदि काम संतोषजनक नहीं है। तो इसके लिए किसी की जवाबदेही बनती है कि वह बताए कि ऐसा क्यों है? यदि कार्य अच्छा है तो जवाबदेही अच्छी बन जाती है।

आज जब हम अपने चारों ओर दृष्टिपात करते हैं तो हमें ऐसा आभास होता है कि जवाबदेही की बड़ी सीमा तक बड़ी मात्रा में अवहेलना की जा रही है। जीवन का कोई भी क्षेत्र अथवा कार्य दिखाई नहीं देता, जिसमें पूरी तरह से पारदर्शिता हो, दूसरे अर्थों में पूरी जवाबदेही हो। एक दूसरे को संशय से देखा जाता है। ऐसा माना जा रहा है कि पूरी जवाबदेही के अभाव के कारण

भ्रष्टाचार, भाई–भतीजावाद, निष्क्रियता तथा अनुशासनहीनता का परिवेश है। इस स्थिति पर शीघ्र अति शीघ्र काबू पाया जाना देश की प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक है।

अगर एक अध्यापक उपयुक्त गुणों से खरा नहीं उतरता है इसके प्रति जवाबदेही का हकदार बन जाता है। उत्तरदायित्व या जवाबदेही का संबंध परिश्रम से है, जो प्रत्येक अध्यापक को याद दिलाता रहे कि रोजगार अपनाने के कारण वे हर उस परिवार के प्रति अपने बच्चों को विद्यालय भेजते हैं, और प्रत्येक उस बच्चे के प्रति जिसे अध्यापक की सेवाएं प्राप्त होती है जिम्मेदार है। जवाबदेही की समस्या बड़ी जटिल कठिन संवेदनशील है। साथ ही यह उतनी ही महत्वपूर्ण है। जवाबदेही के बिना अराजकता की संभावना बनी रहती है। इसके बिना 'जो चाहे', 'सो करें' की स्थिति बन सकती है। अगर एक अध्यापक अपने कर्तव्यों का निर्वाह मेहनत व ईमानदारी से नहीं करता तोवह निम्न पक्षों पर जवाबदेही का जिम्मेदार है। छात्रों का चारित्रिक विकास, प्रभावशाली शिक्षण अधिगम, व्यक्तिगत अंतरों का निराकरण, कक्षा का प्रबंध किस प्रकार किया, पाठांतर क्रियाओं का आयोजन किस प्रकार किया, छात्रों का शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन, छात्रों के कार्यों का मूल्यांकन, विभागीय नियमों का पालन, संपूर्ण विद्यालय व्यवस्था में भागीदारी और कक्षा का परीक्षा फल किस प्रकार रहा?

परंपरागत प्रणाली आज के युग में उपयोगी नहीं क्योंकि ज्ञान के स्तर में निरंतर वृद्धि हो रही है, इसलिए यह और भी आवश्यक हो जाता है कि प्रतिभाओं को पहचानते हुए उन्हें शिक्षण व्यवसाय हेतु प्रोत्साहित किया। ऐसे में अध्यापकों को जवाबदेही अपने प्रति, समाज के प्रति व अभिभावकों के प्रति आवश्यक हो जाती है। दुर्भाग्य से इस व्यवसाय को अंतिम व्यवसाय के रूप में विद्यार्थी मान कर चलते हैं और हमारे अध्यापकों का एक बड़ा हिस्सा अपने उत्तरदायित्व से भागता है, जिसके लिए सरकार को कानून का शिकंजा कसना पड़ता है और सरकार जवाबदेही के लिए बाध्य करने को तैयार है।

अंत में मैं एक शायर शब्दों में यही कहूंगी–

फैसला होता है नेकी ओ बदी का हरदम,
दिल को सीने में छोटी सी अदालत समझों।

संदर्भ

1. कुलश्रेष्ठ, डॉ. एस. पी. (2007). शेक्षिक तकनीकी के मूल आधार, आगरा, 2.
2. सिंह, डॉ० गया शंकर. (2006). शैक्षिक प्रबंधन एवं डिस्ट्रीब्यूटर, नई दिल्ली।
3. अग्रवाल, जे. सी. (2007). शैक्षिक तकनीकी प्रबंध एवं मूल्यांकन आगरा।
4. जैन, श्रीमती स्वाति. शैक्षिक तकनीकी के तत्व एवं प्रबंध, मेरठ।
5. सक्सेना, एन. आर. स्वरूप., ओबरॉय, डॉ. एस. सी. (2007). शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंध के मूलतत्व, मेरठ।